अकबर का धार्मिक दृष्टिकोण
(पारसी, ईसाई धर्म, जैन, सिक्ख धर्म के संदर्भ में)

डॉ. इन्द्रकला सिंह*

अकबर भारत का ही नहीं, वरन् विश्व के सर्वोत्कृष्ट शासकों में एक था। वह मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक तथा संगठनकर्त्ता था। वह मुगल साम्राज्य के स्वर्णयुग का प्रतीक था। अकबर के राज्याभिषेक के समय भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था।[१] अकबर ने सन् १५७५ में धार्मिक शास्त्रार्थ के लिये इबादतखाना बनवाया।[२] प्रारम्भ में इसका उपयोग केवल शेख शैय्यद, उलमा और अमीर ही करते थे। बृहस्पतिवार की राषि को शास्त्रार्थ शुरु होता था और प्राय शुक्रवार की दोपहर तक चलता था। लेकिन मुस्लिम मुल्ला छोटी और निस्सार बातों पर झगड़ा करते थे। इससे अकबर को संतोष नहीं होता था। बदायूँनी ने उन अवस्थाओं का वर्णन किया है जिनके कारण अकबर ने दूसरे स्रोतों से अपनी प्यास बुझाई- 'इन शास्त्रार्थों में सम्राट् प्रत्येक बृहस्पतिवार की राशि को बारी बारी से सैय्यद शेख, उलमा और उमरावों को बुलाया करता था। आने वाले लोग प्रायः अपने स्थान और पद के अनुसार बैठने में झगड़ा करते थे। इसलिये बाद शाह ने आदेश दिया कि उमराव लोग पूर्व की ओर, सैय्यद लोग पश्चिम की ओर, उलमा दक्षिण और शेख उत्तर की ओर बैठें। सम्राट् एक ओर से दूसरी ओर जाया करता था। एक रात को उलमाओं ने एकाएक शोर मचाना शुरु किया और हड़बड़ी मच गई। उनके असभ्य व्यवहार पर सम्राट् को क्रोध आया और मुझसे (बदायूँनी) कहा 'भविश्य में यदि कोई उलमा भलीभाँति व्यवहार न करे और मूर्खता की बात करे तो इत्तिला दो कि मैं उसको सभा भवन से निकाल दूँगा।' मैंने आसफ खा से नम्रतापूर्वक कहा 'यदि मैं इस आज्ञा का पालन करुँ तो अधिकांश उलमाओं को निकल जाना पड़ेगा।' सम्राट् ने पूछा-'तुमने क्या कहा? मेरे उत्तर को सुनकर उसको बड़ी प्रसन्नता हुई और उसके पास बैठे हुए जितने भी लोग थे, उन्हें सुनाया।'[३] उलमाओं के दो दलों में मतभेद हुआ। एक दल दूसरे को काफिर बताने लगे जबकि दूसरा अपने विचारों को सही बताता था। इससे अकबर को विश्वास हो गया कि दोनों दल गलत हैं। सत्य उनके विवादों से परे होना चाहिए।[४] इसलिये सत्य की खोज के निमित्त इसका ध्यान पारसी, जैन, सिक्ख ईसाई और हिन्दू की ओर गया। अबुल फजल कहता है 'इस प्रकार सात देशों के सत्यान्वेषण बादशाह के दरबार में आ पहुँचे। उसका दरबार प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के विद्वानों का सभा बन गया।'[५] अकबर ने मुगल साम्राज्य के विस्तार, सुदृढ़ीकरण, शान्ति एवं व्यवस्था के लिए अनेक उदारवादी नीतियों को अपनाया। अकबर ने देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के उद्देश्य से एक ऐसा धर्म चलाने का निश्चय किया, जिससे राष्ट्र का हित होता हो एवं हिन्दू तथा मुसलमान एक साथ मिलकर रह सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अकबर ने १५८१ ई.

***प्रवक्ता, मध्यकालीन इतिहास राजीव गाँधी शिक्षा महाविद्यालय पैसियां, लक्ष्मीपुर, महाराजगंज (उ.प्र.)**

में 'दीन-ए-इलाही' नाम से एक नवीन मत या धर्म अथवाा संघ की स्थापना की। अकबर की उदारवादी नीति तैमुरिद राजनीति का एक हिस्सा माना जाता है। अकबर के वंश में जो राजनीति स्वरूप था वह एक धार्मिक सहिष्णुता का था। अकबर प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता के कारण हिन्दुओं के व्रतों और त्योहारों में विशेष उत्सव होते थे। तीर्थस्थलों में अच्छे-अच्छे मंदिरों के निर्माण तथा मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा होने लगी थी। बौद्धों, पारसियों तथा ईसाइयों को भी अपने धर्म-प्रचार की पूरी आजादी थी। नवोद्भासित सिख-धर्म तथा नवागन्तुक ईसाई धर्म जन-मानस का सम्पर्क प्राप्त कर रहे थे। इस समय देश में रामोपासना, कृष्णोपासना तथा सूफी-साधना का बोलबाला था। समाज में साधु-सन्तों की पूजा प्रचलित थी। किन्तु, धार्मिक आडम्बरियों, झूठे संन्यासियों, चमत्कारवादी धूर्त योगियों, असफल साधुओं, भूत-प्रेत-पूजकों तथा स्वार्थी ढोंगियों से निम्नस्तरीय समाज आक्रान्त था। दास-प्रथा के कारण समाज कुछ अंशों तक चरित्रहीन हो गया था। हिजड़ों का क्रय-विक्रय स्वतंत्रतापूर्वक होता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों अनेक अनुपयोगी तथा मिथ्या धारणाओं के शिकार थे। वे तन्त्र-मन्त्र, गण्डा-ताबीज, जादू-टोना तथा झाड़-फूँक पर भी विश्वास रखते थे।

पारसी धर्म - अकबर का पारसी साधु दस्तुरजी महरजी राणा से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा था। पारसियों का मुख्य केन्द्र सूरत के पास नवसारी था। ये जो राष्ट्रीय धर्म का पालन करते थे। इसमें सूर्य की पूजा मुख्य रूप से होती थी। १५७२ में अकबर सूरत अभियान के समय पारसियों के सम्पर्क में आया था। अकबर ने इबादत खाने में पारसी धर्म के सम्बन्ध में जानकारी की इच्छा होने पर १५७९ में मेहर जी राणा को निमंत्रित किया। इसके लिए सूबेदार शाहबुद्दीनखां को आदेश दिया जिसके अनुसार उसने मेहरजी राणा को फतेहपुर सीकरी आया। नवसारी से रवाना होते समय इसके साथ इसका भाई नौशेरजी एवं अन्य कई साथी भी थे। अकबर के दरबार में मेहरजी राणा ने बड़ा चमत्कार दिखाया। ऐसी मान्यता है कि एक ब्राह्मण ने मंत्र शक्ति से पीतल की थाली को काफी ऊँचा उठा दिया एवं इसकी तीव्र चमक थी कि यह दूसरे सूरज की तरह दिखाई देती थी। मेहरजी राणा ने इसे मंत्र शक्ति से वापस ला दिया। इसका प्रभाव अकबर पर भी पड़ा। अकबर ने इससे पारसी धर्म पर कई चर्चायें कीं। उसने सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि की उपासना को बतलाया। अकबर ने उसके निर्वाह के लिए २०० बीघा भूमि नवसारी के पास एक गांव में दी जो 'घेलखड़ी' के नाम से प्रसिद्ध है। २ माह सीकरी में रहने के बाद जब मेहरजी राणा वापस लौटे तो उसे दस्तूर (सर्वोच पुरोहित) का पद दिया (१२ मार्च, १५७९ ई.)। मेहरजी राणा फारसी भाषा के अच्छे जानकार थे। अतः अकबर से विचार विमर्श में किसी अन्य दुभाषिये की आवश्यकता नहीं हुई। सूर्य पूजा एवं अग्नि पूजा का हिन्दू धर्म में भी बड़ा सम्मान है। अकबर ने इसे स्वीकार किया एवं मार्च १५८० में सूर्य नमस्कार करने की प्रथा लागू की। इसके अनुसार उसने अबुल फजल को आदेश दिया कि वह महल में प्रतिदिन पारसी धर्म के अनुसार दीपक प्रज्वलित करे एवं निरन्तर जलता रहे। शाम को जब दीप प्रज्वलित करें तब सब लोग सम्मान के लिये खड़े होवे। पारसी धर्म के अनुसार त्यौहार मनाने और उनका कलेण्डर अपनाने के भी आदेश दिये। इस प्रकार से मार्च १५८२ से ही पारसियों के १४ त्यौहारों एवं कर्मकाण्ड को भी प्राथमिकता देने एवं नौ रोजा (नववर्ष) को अपनाने के आदेश दिये थे। पारसी

धर्म अपनाने का प्रमुख कारण अकबर का पारसियों के प्रति झुकाव था। उसका उजबेग एवं चगताई जातियों की अपेक्षा ईरानी जाति के प्रति अधिक झुकाव था।

मेहरजी राणा की मृत्यु के बाद उसके पुत्र केकुबाद को उसका उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया। मेहरजी के ज्येष्ठ पुत्र का नाम हरि जी एवं उससे छोटे का नाम बेहराम था। किन्तु मेहरजी राणा का केकुबाद से अधिक स्नेह था। इसे अकबर ने १०० बीघा भूमि और प्रदान की। अन्य पारसी विद्वान दस्तुर अर्दे शिर नोशेरवान को ईरान से बुलाया था। यह विद्वान था। इसने कोशकार जमालुद्दीन को फारसी भाषा का कोश तैयार करने में सहायता दी। यह कोश अकबर की मृत्यु के ३ वर्ष बाद जहांगीर के राज्य में प्रकाश में आया था। वह १५९७ में भारत से वापस ईरान चला गया था।[७]

ईसाई धर्म – अकबर के राज्यरोहण के समय पश्चिमी समुद्रतट पर पुर्तगाली रह रहे थे। गुजरात अभियान के समय अकबर प्रथम बार इनके सम्पर्क में आया। १५७२ ई. में खम्भात में उससे पुर्तगाली व्यापारी मिलने को आये एवं कई बहुमूल्य वस्तुयें भेंट में दी। जनवरी, फरवरी, १५७३ ई. में मिर्जा बन्धुओं के उपद्रव के सिलसिले में उसे सूरत जाना पड़ा। वहां पुर्तगाली अधिकारी प्रारम्भ में मिर्जाओं को सहायता देने को आये थे। वहां आकर जब उसने अकबर की सैन्य शक्ति को देखा तो उनका विचार बदल गया। अकबर ने भी उनसे संधि करना ही श्रेयस्कर माना। उसने एक दूत गौवा भेजा। उस समय वहां 'दो अंतोनियो द नौरान्या' गौवा का प्रशासक था। उसने अपनी ओर से अन्तोनिओ केब्रोल को अकबर के पास संधि हेतु भेजा। इसने अकबर ने कई बातें पूछी एवं जानकारी के लिए पुर्तगाली की शासन प्रणाली के सम्बन्ध में जानकारी चाही। अन्तोनिओ केब्रोल के साथ मक्का यात्रा हेतु जाने वाले मुसलमानों को पर्याप्त सुविधा देने की इनसे बात की।

१५७७ ई. में सतगांव बंगाल में रहने वाले पुर्तगाली सेनानायक 'पीट्रो तवारेज' अपनी पत्नी सहित अकबर के पास आया। इससे अकबर ने कई प्रश्न पूछे। अकबर इससे बहुत प्रभावित हुआ। इसको ७७७ बीघा भूमि दान में दी। इसकी धर्म निष्ठा सदव्यवहार एवं शिष्टाचार ने अकबर को प्रभावित किया था। किन्तु वह अकबर द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देने में वह सफल नहीं हुआ। उसकी राय के अनुसार सतगांव के पुर्तगाली जुलियन परेरा को आमंत्रित किया। सन् १५७८ में इसके फतेहपुर सीकरी में पहुँचने पर इसने धार्मिक विचार विमर्श में भाग लिया। उस समय गोआ का पुर्तगाली अधिकारी अन्तोनिओ केब्राल संधि की बातें करने को १५७८ में फतेहपुर सीकरी आया हुआ था। इसकी सम्मति पर अकबर ने हाजी हबीबुल्ला को गोआ से कोतुहलकारी वस्तुएं लाने हेतु भेजां इसको काफी धन दिया। यह कई विचित्र वस्तुयें लेकर आया था। इसे १५७९ ई. में गोआ भेजा एवं पादरियों को आमंत्रित किया।[८] अकबर के इस राजदूत का वहां यथेष्ठ सम्मान किया किन्तु पुर्तगाली अधिकारी इस कार्य के लिये हिचकिचाने लगे। पादरियों ने इसके विरूद्ध मुगल दरबार में जाना समयोचित माना। बीजापुर में इन्होंने प्रचार शुरू किया था। अतः अकबर के विशाल साम्राज्य को देखते हुए व्यापारिक लाभ उठाने के दृष्टिकोण को भी प्राथमिकता दी गई। इन्होंने धार्मिक उद्देश्यों के स्थान पर राजनैतिक लाभ लेने का मुख्य उद्देश्य माना था।

जैन धर्म – अकबर का जैन धर्म से सम्पर्क काफी पूर्व हो चुका था। आमेर एवं अजमेर आते जाते मार्ग में कई जैन साधुओं से उसका सम्पर्क हुआ था। १५६८ ई. में जैन मुनि बुद्धि सागर (तपागच्छ के साधु) एवं साधु कीर्ति (खतरतगच्छ) के बीच शास्त्रार्थ हुआ था। खरतरगच्छ के सूत्रों के अनुसार शाही दरबार में यह शास्त्रार्थ हुआ था। पंडित अनिरूद्धजी और महादेव मिश्र आदि हमारों विद्वानों के समक्ष खरतरगच्छ वालों की जीत हुई। नागौर तपागच्छ के कुछ साधुओं के साथ भी अकबर का सम्पर्क हुआ था। इनमें पद्म सुंदर का नाम उल्लेखनीय है इसे अकबर ने सम्मानित किया था। आगरे में श्वेताम्बर और दिगम्बर जैनों का अच्छा प्रभाव था। इस प्रकार से इबादत खाना की विचार गोष्ठियों में आमंत्रण के पूर्व भी अकबर जैनियों के सम्पर्क में आ चुका था।[९]

सिक्ख धर्म – अकबर के शासन काल में तीन प्रमुख गुरू थे – (१) उमरदास (१५५२-७४), रामदास (१५७४-१५८१) एवं अर्जुन (१५८१ से १६०६)। अकबर कई बार पंजाब गया था एवं इन गुरूओं के साथ उसका धार्मिक वार्त्तालाप भी हुआ था। उमरदास और अकबर के मध्य धार्मिक विमर्श होने के कई संदर्भ हैं। रामदास को अकबर ने एक भूमि खंड दिया जहां आज सिखों का पवित्र धर्म स्थान अमृतसर बना हुआ है। सिखों के आगे के गुरूओं ने धर्म प्रचार के लिए इसे केन्द्र-स्थल बनाया। अकबर की उदारता एवं सहिष्णुता से इस धर्म के फैलाव में भी सहायता मिली थी।

सन्दर्भ :

१. बी.ए. स्मिथ.: अकबर द ग्रेट मुगल, पृ. १३.

२. रेवरेंड एच. हेरास, दी मुगल पेंटिंग्ज आन अकबर्स रिलिजियस डिस्कषंस, जे. बी. ब. आर. ए. एस., भाग ३, अध्याय १ और २ (सन् १९२८), सी.एच. आई., ४, पृ. ११३-११४.

३. आइन-ए-अकबरी, भाग-१ (अनु. ब्लाखमैन), पृ. १७१, इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ. ५९-६०.

४. स्मिथ, अकबर दि ग्रेट मुगल, पृ. १६१.

५. अबुल फ़ज़ल, अनु. बेवरिज, अकबरनामा, खण्ड ३, पृ. ३६६.

६. मोदी, जे.जे., पारसीज एट दी कोर्ट ऑफ अकबर एण्ड दस्तूर जी मेहरजी राणा, पृ. ६५-६८; श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल, अकबर द ग्रेट, भाग २, पृ. २३०-२३२.

७. मेहता, रिलिजियस पालिसी ऑफ अकबर, पृ. ५५-५६; बी.एन. लुनिया, अकबर महान, पृ. २५९.

८. अबुल फ़ज़ल, अनु. बेवरिज, अकबरनामा, खण्ड ३, पृ. ३२२; मुन्तख्वाब उत्त तवारीख, भाग २, पृ. २९९.

९. नाहटा, श्रीअगरचन्द्र, श्री जिनचन्द्र सूरि, पृ. ५७.

******